रामरक्षास्तोत्रम्

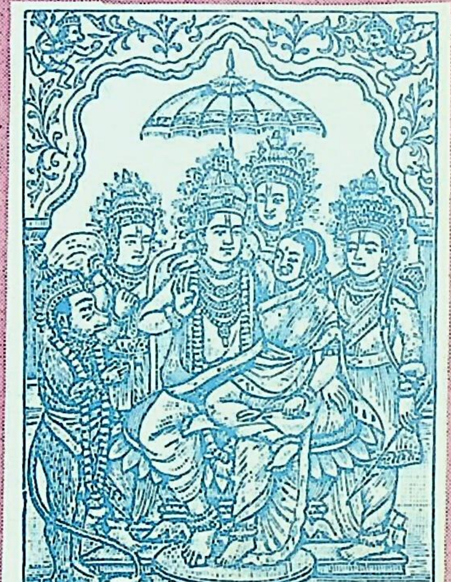

बुधकौशिकऋषिः विरचितः

रामरक्षास्तोत्रम्

(हिन्दी टीका सहितम्)

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई.

संस्करण : जनवरी २०१४, संवत् २०७०

मूल्य १० रुपये मात्र

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक :

खेमराज श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४.

Printers & Publishers

Khemraj Shrikrishnadass

Prop: Shri Venkateshwar Press,

Khemraj Shrikrishnadass Marg,

7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Sife : http://www.khe-shri.com

E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune -411 013.

श्रीरामरक्षास्तोत्रम्

*****

‘रामरक्षाकवच’ की सिद्धि की विधि

नवरात्र में प्रतिदिन नौ दिनों तक ब्राह्ममुहूर्त में नित्यकर्म तथा स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण करके कुशासन पर सुखासन लगाकर बैठ जाइये। भगवान् श्रीराम के कल्याणकारी स्वरूप में चित्त को एकाग्र करके इस महान् फलदायी स्तोत्र का कम से कम ग्यारह बार और यदि यह न हो सके तो सात बार नियमित रूप से प्रतिदिन पाठ कीजिये। पाठ करनेवाले की श्रीराम की शक्तियों के प्रति जितनी अखण्ड श्रद्धा होगी, उतना ही फल प्राप्त होगा। वैसे ‘रामरक्षाकवच’ कुछ लंबा है, परन्तु इस संक्षिप्त रूप से भी काम चल सकता है। पूर्ण शान्ति और विश्वास से इसका जाप होना चाहिये, यहां तक की यह कण्ठस्थ हो जाय।

*****

विनियोगः

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिकऋषिः, श्रीसीतारामचन्द्रो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, सीता शक्तिः, श्रीमद्धनुमान्‌किलकं, श्रीसीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं रामरक्षा-स्तोत्रमन्त्रजपे विनियोगः॥

इस रामरक्षास्तोत्रमन्त्र के बुधकौशिक ऋषि हैं, सीता शक्ति हैं, श्रीमान् हनुमान्‌जी कीलक हैं तथा रामरक्षास्तोत्र के जप में विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डनं रामचन्द्रम्॥

जो धनुष-बाण धारण किये हैं, बद्धपद्मासन से विराजमान हैं, पीताम्बर पहने हुए हैं, ज़िनके प्रसन्न नयन नूतन कमलदल से स्पर्धा करते तथा वाम भाग में विराजमान श्रीसीताजी के मुखकमल से मिले हुए हैं, उन आजानुबाहु, मेघश्याम, नाना प्रकार के अलंकारों से विभुषित तथा विशाल जटा-जूटधारी श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करे।

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥१॥

श्रीरघुनाथजी का चरित्र सौ करोड़ विस्तारवाला है और उसका एक-एक अक्षर भी मनुष्यों के महान पापों को नष्ट करनेवाला है॥१॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्॥२॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम्॥३॥
रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः॥४॥

जो नीलकमल के समान श्यामवर्ण, कमलनयन, जटाओं के मुकुट से सुशोभित, हाथों में खड्ग, तूणीर, धनुष और बाण धारण करनेवाले, राक्षसों के संहारकारी तथा संसार की रक्षा के लिये अपनी लीला से ही अवतीर्ण हुए हैं, उन अजन्मा और सर्वव्यापक भगवान् श्रीरामजी का जानकी और लक्ष्मणजी के सहित स्मरण करके प्राज्ञ पुरुष इस सर्वकामप्रद और पापनाशिनी रामरक्षा का पाठ करें। मेरे सिर की और ललाट की दशरथात्मज रक्षा करें॥२-३-४॥

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः॥५॥

कौसल्यानन्दन नेत्रों की रक्षा करें, विश्वामित्रप्रिय कानों को सुरक्षित रखें तथा यज्ञरक्षक घ्राण की और सौमित्रिवत्सल मुख की रक्षा करें ॥५॥

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥६॥

मेरी जिह्वा की विद्यानिधि, कण्ठ की भरतवन्दित, कन्धों की दिव्यायुध और भुजाओं की भग्नेशकार्मुक (महादेवजी का धनुष तोड़नेवाले) रक्षा करें॥६॥

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥७॥

हाथों की सीतापति, हृदय की जामदग्न्यजित् (परशुरामजी को जीतनेवाला), मध्यभाग की खरध्वंसी (खर नामक राक्षस का नाश करनेवाले) और नाभि की जाम्बवदाश्रय (जाम्बवान् के आश्रयरूप) रक्षा करें॥७॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥८॥

कमर की सुग्रीवेश (सुग्रीव के स्वामी), सक्थियों की हनुमत्प्रभु और ऊरूओं की राक्षसकुल विनाशक रघुश्रेष्ठ रक्षा करें॥८॥

जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः।
पादौ बिभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥९॥

जानुओं की सेतुकृत्, जङ्घाओं की दशमुखान्तक (रावण को मारनेवाले), चरणों की विभीषणश्रीद (विभीषण को ऐश्वर्य प्रदान करनेवाले) और सम्पूर्ण शरीर की श्रीरामजी रक्षा करें॥९॥

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥१०॥

जो पुण्यवान् पुरुष रामबल से सम्पन्न इस रक्षा का पाठ करता है, वह दीर्घायु, सुखी, पुत्रवान्, विजयी और विनयसम्पन्न हो जाता है॥१०॥

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥११॥

जो जीव पाताल, पृथ्वी अथवा आकाश में विचरते हैं और जो छद्मवेश से घूमते हैं, वे रामनामों से सुरक्षित पुरुष को देख भी नहीं सकते॥११॥

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥१२॥

'राम', 'रामभद्र', 'रामचन्द्र'- इन नामों का स्मरण करने से मनुष्य पापों से लिप्त नहीं होता तथा भोग और मोक्ष को प्राप्त कर लेता है॥१२॥

जगज्जेत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥१३॥

जो पुरुष जगत् को विजय करनेवाले एकमात्र मन्त्र रामनाम से सुरक्षित इस स्तोत्र को कण्ठ में धारण करता है (अर्थात् इसे कण्ठस्थ कर लेता है), सम्पूर्ण सिद्धियां उसके हस्तगत हो जाती हैं॥१३॥

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम्॥१४॥

जो मनुष्य वज्रपञ्जर नामक इस रामकवच का स्मरण करता है, उसकी आज्ञा का कहीं उल्लंघन नहीं होता और उसे सर्वत्र जय और मंगलप्राप्ति होती है॥१४॥

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥१५॥

श्रीशिवजी ने रात्रि के समय स्वप्न में इस रामरक्षा का जिस प्रकार आदेश दिया था, उसी प्रकार प्रातःकाल जागने पर बुधकौशिक ऋषि ने इसे लिख दिया॥१५॥

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामःश्रीमान् स नः प्रभुः॥१६॥

जो मानो कल्पवृक्ष के बगीचे हैं तथा समस्त आपत्तियों का अन्त करनेवाले हैं, जो तीनों लोकों में परम सुन्दर हैं, वे श्रीमान् रामजी हमारे प्रभु हैं॥१६॥

तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ॥१७॥

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥१९॥

जो तरुण अवस्थावाले, रूपवान्, सुकुमार, महाबली, कमल के समान विशाल नेत्रोंवाले, चीरवस्त्र और कृष्णमृगचर्मधारी, फल-मूल आहार करनेवाले, संयमी, तपस्वी, धनुर्धारियों में श्रेष्ठ और राक्षसकुल का नाश करनेवाले हैं, वे रघुश्रेष्ठ दशरथकुमार श्रीराम और लक्ष्मण दोनो भाई हमारी रक्षा करें॥१७-१८-१९॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशा
वक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ।
रक्षणाय मम राम लक्ष्मणावग्रतः
पथि सदैव गच्छताम् ॥२०॥

जिन्होंने संधान किया हुआ धनुष ले रखा है, जो बाण का स्पर्श कर रहे हैं तथा अक्षय बाणों से युक्त तूणीर लिये हुए हैं, वे श्रीराम और लक्ष्मण मेरी रक्षा करने के लिये मार्ग में सदा मेरे आगे चलें॥२०॥

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन्मनोऽरथोस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२१॥

सर्वदा उद्यत, कवचधारी, हाथ में खड्ग लिये, धनुषबाण धारण किये तथा युवा अवस्थावाले भगवान् श्रीराम लक्ष्मणसहित आगे-आगे

चलकर हमारे मनोरथों की रक्षा करें॥२१॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः॥२२॥
वेदान्तवेद्योयज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः॥२३॥
इत्येतानि जपेन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः॥२४॥

(भगवान् का कथन है कि) राम, दाशरथि, शूर, लक्ष्मणानुचर, बली, काकुत्स्थ, पुरुष, पूर्ण, कौसल्येय, रघूत्तम, वेदान्तवेद्य, यज्ञेश, पुराणपुरुषोत्तम, जानकीवल्लभ, श्रीमान् और अप्रमेयपराक्रम- इन नामों का नित्यप्रति श्रद्धपूर्वक जप करने से मेरा भक्त अश्वमेधयज्ञ से भी अधिक फल प्राप्त करता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है॥२२-२४॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः॥२५॥

जो लोग दूर्वादल के समान श्यामवर्ण, कमलनयन, पीताम्बरधारी भगवान् श्रीराम का इन दिव्य नामों से सेवन करते हैं, वे संसारचक्र में नहीं पडते॥२५॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरम्,
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।

राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तिमूर्तिं,
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्॥२६॥

लक्ष्मणजी के पूर्वज, रघुकुल में श्रेष्ठ, सीताजी के स्वामी, अतिसुन्दर, काकुत्स्थकुलनन्दन, करुणासागर, गुणनिधान, ब्राह्मणभक्त, परम धार्मिक, राजराजेश्वर, सत्यनिष्ठ, दशरथपुत्र, श्याम और शान्तमूर्ति, सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर, रघुकुलतिलक, राघव और रावणारि भगवान् श्रीराम की मैं वन्दना करता हूँ॥२६॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥२७॥

राम, रामभद्र, रामचन्द्र, विधातृस्वरूप, रघुनाथ, प्रभु सीतापति को नमस्कार है॥२७॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम॥२८॥

हे रघुनन्दन श्रीराम! हे भरताग्रज भगवान् राम! हे रणधीर प्रभु राम! आप मेरे आश्रय होइये॥२८॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि

श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ।।२९।।

मैं श्रीरामचन्द्रजी के चरणों का मन से स्मरण करता हूँ, श्रीरामचन्द्रजी के चरणों का वाणी से कीर्तन करता हूँ, श्रीरामचन्द्रजी के चरणों को सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ तथा श्रीरामचन्द्रजी के चरणों की शरण लेता हूँ।।२९।।

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुः
नान्यं जाने, नैव जाने न जाने ।।३०।।

श्रीराम मेरी माता हैं, श्रीराम मेरे पिता हैं, श्रीराम स्वामी हैं और श्रीराम ही मेरे सखा हैं। दयामय रामचन्द्रजी ही मेरे सर्वस्व हैं, उनके सिवा और किसी को मैं नहीं जानता- बिल्कुल नहीं जानता।।३०।।

दक्षिणो लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ।।३१।।

जिनकी दायी ओर लक्ष्मणजी, बांयी ओर जानकीजी और सम्मुख हनुमान्जी विराजमान हैं, उन श्रीरघुनाथजी की मैं वन्दना करता हूँ।।३१।।

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।३२।।

जो सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर, रणक्रीड़ा में धीर, कमलनयन, रघुवंश-

नायक, करुणामूर्ति और करुणा के भण्डार हैं, उन श्रीरामचन्द्रजी की मैं शरण लेता हूँ॥३२॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥३३॥

जिनकी मन के समान गति और वायु के समान वेग है, जो परम जितेन्द्रिय और बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हैं, उन पवननन्दन वानराग्रगण्य श्रीरामदूत की मैं शरण लेता हूँ॥३३॥

कूजंतं रामारामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥३४॥

कवितामयी डाली पर बैठकर मधुर अक्षरोंवाले राम-राम इस मधुर नाम को कूजते हुए वाल्मीकिरूप कोकिल की मैं वन्दना करता हूँ॥३४॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥३५॥

आपत्तियों को हरनेवाले तथा सब प्रकार की सम्पत्ति प्रदान करनेवाले लोकाभिराम भगवान् श्रीराम को मैं बारंबार नमस्कार करता हूँ॥३५॥

गर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम्॥६॥

'राम-राम' ऐसा घोष करना सम्पूर्ण संसारबीजों को भून डालनेवाला, समस्त सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति करानेवाला तथा यमदूतों

को भयभीत करनेवाला है॥३६॥

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामन्नास्ति परायणो परतरं रामस्य दासोस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥३७॥

राजाओं में श्रेष्ठ श्रीरामजी सदा विजय को प्राप्त होते हैं। मैं लक्ष्मपति भगवान् श्रीरामजी का भजन करता हूँ। जिन श्रीरामचन्द्रजी ने सम्पूर्ण राक्षससेना का ध्वंस कर दिया था, मैं उनको प्रणाम करता हूँ। श्रीरामजी से बड़ा और कोई आश्रय नहीं है। मैं उन श्रीरामचन्द्रजी का दास हूँ। मेरा चित्त सदा श्रीरामजी में ही लीन रहे; हे श्रीराम! आप मेरा उद्धार कीजिये॥३७॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनामतुल्यंतद्राम नाम वरानने॥३८॥

(श्रीमहादेवजी पार्वती से कहते हैं-) हे सुमुखि! रामनाम विष्णुसहस्रनाम के तुल्य है। मैं सर्वदा 'राम, राम, राम' इस प्रकार मनोरम रामनाम से ही रमण करता हूँ॥३८॥

इति श्रीबुधकौशिकमुनिविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्रीरामस्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम्।
नवकञ्ज लोचन कञ्ज मुखकर कञ्जपद कञ्जारुणम्।।
कन्दर्प अगणित अन्तिम छबि नव नील नीरज सुन्दरम्।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्।।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द दशरथनन्दनम्।।
सिरक्रीट कुण्डल तिलक चार उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज सर चापधर संग्राम जित खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मनरञ्जनम्।
मम हृदयकञ्ज निवास कुरु कामादिखलदलगञ्जनम्।।
मनजाहि राचो मिलहि सो वर सहजसुन्दर सांवरो।
करुणानिंधान सुजान शील सनेह जानत रावरो।।
एहि भाँति अशीश सुनि सहित हिय ह्रर्षित अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

सोरठा

जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हर्ष न जात कहि।
मञ्जुल मङ्गल मूल, वाम अङ्ग फरकन लगे।।
सियावर रामचन्द्र की जय।।१।।

श्रीरामाष्टक

हे रामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणा केशवा ।।१।।
गोविन्दा गरुड़ध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा ।।२।।
हे कृष्णा कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ।।३।।
वैंकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम् ।।४।।
आदौ रामतपोवनादि गमनं हत्वा मृगं काञ्चनम्,
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ।
वालीनिर्दलनं समुद्र तरणं लङ्कापुरीदाहनम्,
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ।।५।।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२- २४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS